Price : Rs. 10.00 Per Copy
Annual Subscription : Rs. 100.00

सम्पर्क ♦ सहयोग ♦ संस्कार ♦ सेवा ♦ समर्पण

नीति Niti

भारत विकास परिषद् की मासिक पत्रिका
वैशाख-ज्येष्ठ

MONTHLY PUBLICATION OF
BHARAT VIKAS PARISHAD
MAY-2009

हैदराबाद में आयोजित राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक

RASHTRADEVO BHAV ♦ राष्ट्रदेवो भव

बिन पानी सब सून

जल ही जीवन है। यह बात जानते हुए भी हम पानी को बहुत बरबाद करते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के 2004 के एक सर्वेक्षण के अनुसार पूरी दुनिया के एक अरब से अधिक लोगों को पीने का साफ़ पानी नहीं मिलता है। भू व जल वैज्ञानिकों की भविष्यवाणियों के अनुसार भारत, चीन और अमेरिका जैसे देशों में अधिक जल दोहन से भू-जलस्तर में तेज़ी से आ रही गिरावट इस खतरे का संकेत है कि आने वाले समय में पानी के लिए लड़ाईयां हो सकती हैं और तीसरा विश्वयुद्ध पानी के नाम लड़ा जाएगा। पानी के महत्व को न समझ पाने और इसके अनियमित व अधिक दोहन एवं प्रदूषण के चलते ही आज सभी देशों को पानी के संकट का सामना करना पड़ रहा है। पानी के लिए लड़ाई गली मोहल्ले से लेकर विभन्न देशों तक अक्सर देखी गई है। पंजाब-हरियाणा, कर्नाटक-तमिलनाडु, हरियाणा-दिल्ली जैसे प्रान्तों का पानी के लिए आपसी तनाव जग जाहिर है। बहुत से लोग यह नहीं जानते कि वे अनजाने में बहुत पानी बरबाद करते हैं। हवा, पानी मिट्टी आदि प्रकृति की देन हैं परन्तु मुफ़्त का माल नहीं है। अगर हम पानी की बचत नहीं करेंगे तो 'बिन पानी सब सून' कथन के अनुसार एक दिन ऐसा आएगा कि पानी के बिना हम तड़पने लगेंगे। एक शहर में सभी मिलकर यदि यह संकल्प कर लें कि हम पानी को बरबाद नहीं होने देंगे तो उस शहर में कभी भी पानी की कमी नहीं होगी। आओ हम सब मिलकर यह सुनिश्चित् करें कि पानी को बरबाद नहीं करेंगे।

निम्नलिखित अनुसार आप पानी की बचत कर सकते हैं :-

1. कभी भी नल को बिना आवश्यकता खुला न छोड़ें।

2. शेविंग या पेस्ट करते या हाथ मुँह धोते समय पानी का प्रयोग न करते समय नल बन्द कर दें। मग में पानी भरकर प्रयोग करें। यदि सम्भव हो तो पुश बटन वाली टूटी लगवायें।

3. नहाते समय पानी बाल्टी भर कर ही प्रयोग करें। 4. कपड़ों को मशीन में नहीं बाल्टी में खंगालें। 5. किसी पाईप में रिसाव हो तो उसे तुरन्त ठीक करायें। 6. पानी की टंकी/कूलर आदि में गुबारा लगवायें ताकि टंकी भर जाने पर पानी बाहर न निकले। 7. बर्तन साफ़ किए हुए टब के पानी व कपड़े खंगाले हुए पानी को पौधों व बगीचों में काम लें। 8. मिट्टी वाले सामान/स्थान को पहले झाड़ पोंछ लें फिर गीले कपड़े से साफ़ करें। 9. घरों में फर्श धोने की बजाए केवल पोचा लगाकर ही साफ करें। पाईप से फर्श न धोएँ। 10. यदि कहीं भी कोई सार्वजनिक नल खुला देखें तो उसे तुरन्त बन्द कर दें। 11. अपने वाहनों को पाईप से न धोएँ। 12. छिड़काव न करें।

स्वयं करें, परिवार व काम वाली नौकरानी को समझाएँ, समाज को जगायें, देश बचाएँ।

-रमेश गोयल, 20 आर.एस.डी. कॉलोनी, सिरसा

"Save Water - Nothing Can Replace It."

से बचना जरूरी था। इसीलिए 10 मई 1944 तक वे भूमिगत होकर क्रांति का संचालन करते रहे। उन दिनों के उनके अनुभव किसी रोमांचकारी उपन्यास की कथावस्तु से कम नहीं है।

इन दिनों लोहियाजी देश के बड़े-बड़े नेताओं के सम्पर्क में आये। अनुभव और एकांत स्वाध्याय से उनकी विचार, बुद्धि परिपक्व होती गई। इस तरह जेल की कठोर यातनाओं को झेलते हुए वे लगातार देश स्वतंत्र कराने के सपने बुनते रहे और फिर एक दिन यह सपना साकार हुआ। 14 अगस्त 1947 को रात ठीक 12 बजे भारत आजाद हो गया। यह कहने की कोई जरूरत नहीं कि लोहियाजी समाजवादी थे। वे समाज को सत्य मानकर चलते थे, परन्तु व्यक्ति से अलग रहकर नहीं। लोहिया राजनीतिज्ञ होने से पहले एक सामाजिक क्रांतिद्रष्टा थे। मृत्यु तक वे अन्याय और अत्याचार के खिलाफ लड़ते रहे। उनका यह दृढ विश्वास था कि हिन्दी की उन्नति के बिना देश का विकास असंभव है। अपने हिन्दी प्रेम को लेकर वे काफी बदनाम भी रहे। लोहिया अनीश्वरवादी थे, फिर भी वे राम, कृष्ण पर नितान्त श्रद्धा रखते थे। उन्होंने ही रामायण मेले की नींव डाली।

डॉ. लोहिया का आर्थिक चिन्तन हमारे देश, परिस्थिति के अनुकूल है। उनकी यह मान्यता थी कि आर्थिक विषमता को दूर करके, मूल्य वृद्धि पर रोक लगाकर, लोगों के नैतिक आचरण को उठाकर, भूमि का पुनर्वितरण करके भूमिहीनों को जमीन देकर, जमीन को भूसेना द्वारा खेती योग्य बनाकर, देश में छोटी-छोटी मशीनों द्वारा चलित उद्योगों को प्रस्थापित करके तथा खर्च की ही इस देश में समाजवाद साकार किया जा सकता है। डा. लोहिया बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वह अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री, अध्यात्म पुरूष और राजनीतिज्ञ सभी कुछ थे। अपने सिद्धांत का कड़ा पालन करने के कारण ही वे अधिक मित्र नहीं बना सके। सिद्धांत के लिये सब कुछ छोड़ने को तैयार इस वीर पुरूष ने अपने हित को देश हित से कभी अलग नहीं समझा। तभी तो उन्हें उपेक्षित, गरीबों और दलितों का मसीहा कहा गया है। 30 सितम्बर 1967 में पौरूष ग्रंथि का ऑपरेशन होने के बाद डा. लोहिया का स्वास्थ्य बिगड़ने लगा दो अक्टूबर के बाद वे करीब-करीब चेतनाशून्य हो गये। नवरात्रि के प्रारंभ के साथ-साथ उनकी हालत गंभीर होने लगी। नवमी के दिन काल के क्रूर हाथ ने इस लौह पुरूष को हमेशा-हमेशा के लिये हमसे छीन लिया। चेतन प्रवाह की ऐसी अन्तकथा है जो अवरोधों को समेटती हुई अनवरत विकासोन्मुखी रही है। सदियों तक उनके चरित्र व व्यक्तित्व से अभिव्यक्त हुई। अक्षय विचार धारा मानव की समस्याओं को सुलझाने में प्रकाश स्तम्भ का काम करेगी। इस दृष्टि से उनकी जीवनगाथा का अध्ययन और निष्कर्षात्मक स्थितियों का विश्लेषण करना आवश्यक है।

डॉ. लोहिया अपने आप में स्वयं एक इतिहास थे, जो हर विद्रोही हृदय को झकझोर कर आगे बढ़ने को उकसाता है। वे एक ऐसी सच्चाई भी थे, जो जीवन को कभी पलायन नहीं सिखाती।

आज की दुनिया की दो तिहाई आबादी का दर्द, गरीबी और विपन्नता को जड़ से मिटाने, समस्त विश्व को युद्ध और विनाश की बीमारी से मुक्त कराने का उपाय डा. लोहिया अपनी बात को लगातार दोहराते रहे, क्योंकि उनका विश्वास था कि सही बात यदि बार-बार और बराबर कही जाये तो धीरे-धीरे लोगों को उसे सुनने की आदत पड़ती जायेगी। इसलिये दूसरों को अजीबो गरीब लगने वाली अपने बातें वे निरंतर जीवन पर्यन्त कहते रहे।

मिशन पानी बिजली बचत

देश और समाज की दो भयंकर दैनिक समस्याओं के प्रति जनता को सचेत एवं जागरूक करने के लिए विभिन्न सामाजिक संस्थाओं में अग्रणी सिरसा (हरियाणा) के प्रतिष्ठित समाजसेवी तथा अन्तर्राष्ट्रीय सामाजिक संस्था भारत विकास परिषद के केन्द्रीय अधिकारी एवं क्षेत्रीय संयोजक तथा जिला आयकर बार एसो. के अध्यक्ष श्री रमेश गोयल ने पानी बिजली बचत अभियान को एक मिशन के रूप में अपना लिया है। अब तक लगभग 70 हजार से अधिक विद्यार्थियों को स्कूलों में जाकर पानी व बिजली का महत्व बताने के साथ-साथ पानी बरबाद कैसे किया जा रहा है और उसे कैसे बचाया जा सकता है, के बारे में विस्तार से बताते हैं। श्री गोयल सिरसा नगर के साथ साथ आस-पास के गांवों में भी पंचायतों के माध्यम से जनता को जागरूक कर रहे हैं और अब तक 16 गांवों में जा चुके हैं। श्री गोयल ने अभी अपना कार्यक्षेत्र सिरसा नगर तथा नाथुसरी व सिरसा ब्लॉक के 106 गांवों को बनाया है और उसके बाद सिरसा जिला लक्ष्य रखा है जिसमें पांच नगरों के अतिरिक्त कुल 323 गांव हैं। इस विषय में 2 फुट गुणा 3 फुट के लगभग 500 बैनर प्रमुख सार्वजनिक स्थानों पर लगाये जा रहे हैं। अब तक 70 हजार विज्ञप्तियां जनता में वितरित की जा चुकी हैं और निरन्तर वितरण जारी है।

करना चाहिए, जिससे सम्यक्-विकास, आत्मनिर्भरता और समृद्धि का मार्ग प्रशस्त हो सके।

मानव जीवन की सार्थकता भी इसी में है कि जिसको जो भी काम मिले, वह उसे पूरी श्रद्धा, लगन और शुद्धता के साथ करे। इसकी उसकी जीवंतता अक्षुण्ण रहेगी और वह कदाचित सच्चा मानव कहलाने का पात्र होगा। कर्म व्यक्ति के साथ-साथ उसके परिवेश, उसके समाज और अंततः राष्ट्र को भी प्रभावित करता है। अतः कर्म के प्रतिपादन में समष्टि की भावना अवश्य होनी चाहिए, जिससे निजहित के साथ-साथ परिहित का उद्देश्य भी सार्थक और सफल हो सके।

-सहायक जनपद शिक्षा अधिकारी, लिकाबाली, वेस्ट शियांग, अरुणाचल प्रदेश

मिशन पानी-बिजली बचत

भारत विकास परिषद्, सिरसा शाखा द्वारा संस्थापक, अध्यक्ष व क्षेत्रीय संयोजक श्री रमेश गोयल के नेतृत्व में "जल विद्युत बचत जागृति अभियान" चलाया जा रहा है, जिसके अन्तर्गत श्री गोयल प्रतिदिन विद्यालयों की प्रार्थना-सभा में जाकर विद्यार्थियों को पानी व बिजली के महत्व व उसके सही उपयोग करने तथा बचत करने के बारे में बताते हैं। श्री गोयल के अनुसार यदि पानी की बर्बादी रोकी जाए तो वर्षों तक पानी की कमी दूर की जा सकती है और पानी की बर्बादी को कैसे रोका जाए इस पर प्रकाश डालते हुए बताते हैं कि पानी कैसे बचाया जाए तथा प्रेरणा देते हैं कि पानी बचाने पर मोटर कम चलानी पड़ेगी और.....

पानी बचेगा, बिजली बचेगी। बिजली बचेगी धन बचेगा॥

बिजली की खपत कम करने के लिए भी छोटी-छोटी बातों का उदाहरण देकर विद्यार्थियों को जाग्रत करते हैं। श्री गोयल अब तक लगभग 20 स्कूलों (विवेकानन्द स्कूल, महाराजा अग्रसेन स्कूल, सिरसा स्कूल, जैन कन्या विद्यालय, एपी इन्टरनेशनल स्कूल, जी.आर.जी. स्कूल, विकास हाई स्कूल, अनुपम स्कूल, राजकीय व मा. विद्यालय, आर्य स्कूल, आर्य कन्या स्कूल, आर.एस.डी. स्कूल आदि) में यह कार्यक्रम आयोजित कर चुके हैं और अधिक से अधिक स्कूलों में जाने का प्रयास है। श्री गोयल स्टेशनरी को बचत के माध्यम से पेड़ कटने से बचाने व समय के सदुपयोग के बारे में भी विशेष प्रकाश डालते हैं। श्री रमेश गोयल पिछले कई वर्षों से पानी व बिजली की बचत के लिए सिटी केबल के माध्यम से प्रचार कर रहे हैं और इस वर्ष इसे विशाल स्तर पर एक मिशन/आंदोलन के रूप में अपनाया है। विवेकानन्द विद्यालय से भारत विकास परिषद् के तत्वावधान में एक "जल बचाओ रैली" भी आयोजित की गई, जिसे क्षेत्रीय संयोजक श्री रमेश गोयल ने हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। इस मिशन में शाखाध्यक्ष श्री डी.डी. वर्मा, सचिव हरिओम भारद्वाज, कार्यक्रम सहसंयोजक दीनानाथ अग्रवाल, इन्द्र गोयल व सुमन मित्तल सहयोग कर रहे हैं। कुछ कार्यक्रमों में जन स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों के अतिरिक्त उपायुक्त श्री वी. उमाशंकर व उपमण्डलाधीश श्री हरीश भाटिया विशिष्ट अतिथि रहे और उन्होंने परिषद् व श्री गोयल के प्रयास को अनुकरणीय बताया।

भारत विकास परिषद्, सिरसा शाखा ने पानी बचत सम्बन्धी 50 हजार इश्तिहार छपवाकर विद्यार्थियों के माध्यम से हर घर में यह संदेश पहुँचाने का श्रेष्ठ व सफल प्रयास किया है। सिटी केबल के माध्यम से भी श्री रमेश गोयल ने जनता को पानी व बिजली बचाने व सदुपयोग करने के लिए अपील की है।

-हरिओम भारद्वाज, शाखा सचिव, भारत विकास परिषद्, सिरसा

प्रगतिशील भारतीय मिजाज का साप्ताहिक प्रवक्ता

प्रभात

- पीड़ित, दलित, असहाय मानवता का ध्येय पत्र। ❖ छत्तीसगढ़ का राष्ट्रीय साप्ताहिक।
- होम्योपैथी और बायोकेमिक के अनुभवी डॉक्टरों का मार्गदर्शन।
- छपने के लिए लिखें। एजेंटों और प्रतिनिधियों की देशव्यापी नियुक्तियाँ जारी हैं।

सम्पर्क :- उड़िया कॉम्प्लेक्स, जमशेदपुर-831 001

रामरजाई

✍ कुंवर सुरेन्द्र सिंह "रामचाकर"

संत शिरोमणि तुलसीदास जी ने रामायण में "रामरजाई" (रामजी की इच्छा) को सर्वोपरि बताया है। उनके अनुसार रामजी का सद्भक्त कभी भूलकर भी मन से रामजी की इच्छा के विरुद्ध नहीं जाता। वह यह जानता है कि उनकी इच्छा किसी भी प्रकार से मेटी या टाली नहीं जा सकती। इस प्रकार जीव का हित इसी में है कि वह "रामरजाई" सिद्धांत का स्वेच्छापूर्वक सहर्ष सम्मान व पालन करे, अन्यथा भी स्वामी-द्रोह ही सबसे बड़ा पाप है, जबकि स्वामी राम की इच्छा के अनुकूल चलना अर्थात् जीव व जगत के हितार्थ कार्य करना ही पुण्य होकर सबसे बड़ा धर्म है। तुलसीदास जी की बात कोई माने या न माने, परंतु यह अटल सत्य है कि इस जगत में जो भी होता है, वह सब रामजी (सृष्टिकर्ता) की इच्छा से ही होता है एवं वह भी अंततः हमारे अच्छे-बुरे कर्मों का फल होता है, फिर उससे मुकरने या बचने का क्या औचित्य? इसलिए सद् व शुभपरिणामों के लिए तो हमें सर्वप्रथम अपनी करनी पर ध्यान देना होगा, फिर जो हो, उसे ईश्वरीय-इच्छा जानकर उसी में राजी रहना चाहिए, यही एक वास्तविक आस्तिक की सर्वोत्तम नीति हो सकती है, क्योंकि अन्यथा भी हम नाराज रहकर क्या कर लेंगे?

इसके बावजूद मानवीय विडम्बना है कि हम विधि के विधान व प्राकृतिक नियमों के विपरीत चलते हुए भी एक सुखद व उज्ज्वल भविष्य के दिवास्वप्न संजोए बैठे हैं। वैसे स्वप्न देखना बुरा नहीं, क्योंकि स्वप्नों व संकल्पों के बिना तो हमारी विकास-यात्रा ही थम सकती है तथा हम सद्गति की बजाय अधोगति या दुर्गति की ओर बढ़ सकते हैं, जो रामजी कदापि नहीं चाहते, इसलिए उन्होंने हमारे लिए इतना कष्ट सहकर इस धराधाम पर अपनी शक्ति व साथियों के साथ साकार रूप में विचरण किया तथा "रामराज्य" की स्थापना की। क्या हम उन सबके चरित्रों से कोई सबक नहीं ले सकते या उन्हें इसी प्रकार नकारते स्वयं अपनी प्रगति के बाधक बनेंगे, यही आज विशेष विचारणीय है। यदि हम राम व रामायण के कथानक को मात्र एक कवि की कपोल कल्पना ही मान लें, तो भी वे हमारे लिए उतने ही प्रासंगिक हैं, क्योंकि उनसे हमारे सुनहरे सपनों व शिव-संकल्पों के पूर्ण होने की भरपूर संभावनायें बनी रहती है, फिर ऐसे कल्याणकारी व उत्थानकारी तत्वों की अवहेलना व उपेक्षा करने का क्या मतलब? यदि हम तत्काल अपने कुकर्मों से विरत नहीं होते हैं तो हमें आगामी रामरजाई "प्रलय" से कोई नहीं बचा सकता।

वस्तुतः यह समस्त सचराचर भौतिक संसार, प्रकृति व पुरुष (ब्रह्म व माया) की संयुक्त उपज है, इसलिए भक्त कवियों ने इसे ब्रह्ममय (सियाराममय) कहा है एवं उसे उसी रूप में मानने व स्वीकार करने पर ही हमारी तमाम मानसिक व लौकिक समस्याओं का समुचित समाधान हो सकता है। सम्यक्-दृष्टि, सम्यक्-दर्शन, सम्यक्-आचरण व सम्यक्-व्यवहार ही हमें इस धरती पर आपस में समन्वय, सद्भाव व सुख-शांति से रहना सिखाकर स्वर्गीय-आनंद का लाभ दिला सकता है। जगत के तमाम गुण-दोषमय तत्व व प्रपंच ईश्वरीय हैं, उन्हें जानने व पहचानने की सद्बुद्धि भी भगवान ने हमें प्रदान की है, परंतु फिर भी न जाने क्यों हम दुर्बुद्धिपूर्ण व्यवहार कर अपना व अन्यों का अहित करने में लगे हैं? जहाँ सुमति है, वहाँ सुख-सम्पत्ति है एवं जहाँ कुमति है, वहाँ दुःख और विपत्ति है। इसलिए जीव व जगत के हितैषी तमाम संत-महात्मा ईश्वर से केवल "सन्मति" ही मांगते हैं, क्योंकि फिर अन्य उपलब्धियाँ तो स्वमेव हस्तगत हो जाती हैं एवं सन्मति तो केवल सत्यधर्म पर चलने से ही मिल सकती है। "राम" सत्यधर्म के साक्षात् अवतार हैं,

बचत

पानी

"जल ही जीवन है।" यह बात जानते हुए भी हम पानी को बहुत बरबाद करते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के एक सर्वेक्षण के अनुसार पूरी दुनिया के एक अरब से अधिक लोगों को पीने का साफ पानी नहीं मिलता। भू-जल वैज्ञानिकों की भविष्यवाणियों के अनुसार भारत, चीन, और अमेरिका जैसे देशों में अधिक जल दोहन के कारण जल स्तर में तेजी से आ रही गिरावट इस खतरे के संकेत हैं कि आने वाले समय में पानी के लिए लड़ाईयां हो सकती है। दो वर्ष पूर्व ही अंतर्राष्ट्रीय जल प्रबंधन संस्थान की रिपोर्ट के अनुसार तीसरा विश्वयुद्ध पानी के नाम से लड़ा जाएगा। केंद्रीय जल संसाधन मंत्रालय के एक सर्वेक्षण के अनुसार देश के 16 राज्यों में पिछले एक दशक के भू-जल स्तर में चार मीटर की गिरावट आई है। पानी के महत्व को न समझ पाने और इसके अनियमित व अधिक दोहन एवं प्रदूषण के चलते ही आज सभी देशों को पानी के संकट का सामना करना पड़ रहा है। प्रति व्यक्ति जल उपलब्धता 5000 घन मीटर के स्थान पर मात्र 2200 घन मीटर ही रह गई है।

पानी के लिए लड़ाई गली मौहल्ले से लेकर विभिन्न देशों तक आप देख सकते हैं। पंजाब-हरियाणा, कर्नाटक-तमिलनाडू, हरियाणा-दिल्ली, उत्तरप्रदेश-हरियाणा, पंजाब-राजस्थान जैसे प्रांतों का पानी के लिए आपसी विवाद जग जाहिर है। पानी के लिए विभिन्न प्रान्तों में आन्दोलन, पुलिस फायरिंग, जन हानि, आयोग गठन, एक सामान्य प्रक्रिया बन गई है। जून 2005 में राजस्थान में पानी की मांग कर रही भीड़ पर पुलिस फायरिंग के कारण कई लोग मारे गए थे। खेतों में पानी लगाने के झगड़े के कारण देश में लोगों के मारे जाने की घटनाएं समाचार पत्रों में रोज छपती हैं। पानी की कमी के कारण किसी गांव के लड़के अविवाहित रह जाते हैं तो कभी भगवान जगननाथ पुरी के प्रांगण में पानी की कमी अनुभव की जाती है। पानी को लोग मुफ्त का माल व प्रकृति का अनमोल उपहार मानते हैं, जबकि वास्तव में ऐसा नहीं हैं।

भू-जल के अंधाधुंध दोहन के कारण प्राकृतिक आपदाएं भूकम्प आदि का प्रकोप बढ़ा है। केंद्रीय अथवा राज्य के जल नियंत्रण बोर्ड से बिना स्वीकृति के लोग भू-जल का दोहन करके पानी बेच रहे हैं।

बहुत से लोग यह नहीं जानते कि वे अनजाने में भी बहुत पानी बरबाद करते हैं। उदाहरण के रूप में जब मुंह साफ करने के लिए अपना ब्रुश गीला करने के लिए टूंटी खोलते हैं तो कुछ ही लोग उसे बंद करते हैं अन्यथा ब्रुश करने तक टूंटी से पानी बहता रहता है और काफी लीटर साफ पानी नाली में बह जाता है। इसी प्रकार ब्रुश-मंजन करते समय जब तक आप कूरला नहीं करते तब तक पानी बहता रहता है और साफ पानी बरबाद होता रहता है। जब कुएं से पानी भरने के लिए पाईप लगा दिया जाता है और अपने काम में लग जाते हैं तब काफी पानी बह जाता है और कितना पानी बह गया आप नहीं जानते। नहाते समय जब आप अपनी बाल्टी की टूंटी खुली छोड़ कर मग से नहाने लगते हैं तो आप भूल जाते हैं कि आपके साबुन लगाते समय पानी की बाल्टी भर गई है तथा आपने टूंटी बंद नहीं की और पानी नाली में बह रहा है। वास्तव में नहाने के लिए एक या दो बाल्टी पानी प्रयोग करते हैं परंतु जो पानी नाली में बह गया वह पानी आठ-दस बाल्टी या अधिक हो सकता है क्योंकि यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप साबुन लगाते समय कितना समय लगाते हैं। कपड़े धोते समय हमारी माताएं बहनें बहुत पानी बरबाद करती हैं। टूंटी खुली छोड़ देती हैं। पानी में कपड़ों को खंगालते समय टूंटी चलती रहती है बाल्टी भरती रहती है और काफी पानी बहता रहता है। बाल्टी भरने के बाद टूंटी को बंद नहीं करती। बहुत से घरों में मशीन से कपड़े धोते हैं तो पानी की पाईप को सीधे मशीन से जोड़ देती हैं और मशीन से पानी बहता रहता है। उन्हें ध्यान ही नहीं रहता कि पानी दस मिनट चला या बीस मिनट चला और बहुत पानी नाली में बहता चला जाता है और वह अपने

भारत विज्ञान परिषद् – स्मारिका

11 वां अन्तर्राष्ट्रीय व 26 वां राष्ट्रीय अधिवेशन

24-25 दिसम्बर 2011 — चण्डीगढ़

जल ही जीवन है

पृथ्वी पर 71 प्रतिशत पानी है परन्तु पीने का पानी कुल उपलब्ध पानी का एक प्रतिशत से भी कम है शेष पानी गन्दा या खारा है । अधिक वृक्ष कटान से वैश्विक बढ़ते तापमान के कारण कम वर्शा तथा अधिक भू जल दोहन के कारण पानी की बढ़ती कमी खतरनाक संकेत हैं । पानी के महत्व को न समझ पाने के कारण पानी को प्रयोग से अधिक मात्रा में बरबाद किया जा रहा है जिससे पानी की कमी विश्व व्यापी होती जा रही है । पानी के लिए लड़ाई गली मोहल्ले से लेकर विभिन्न देषों तक अक्सर देखी जाती हैं । पंजाब–हरियाणा, कर्नाटक–तामिलनाडू, हरियाणा–दिल्ली, पंजाब –राजस्थान, आन्ध्र प्रदेश–तामिलनाडू जैसे प्रान्तों का पानी के लिए आपसी तनाव जग जाहिर है । ध्यान रहे पानी की हर एक बूंद कीमती है । पानी आवश्यकता अनुसार ही प्रयोग करें । बिना आवश्यकता कभी नल खुला न छोड़ें । पानी कहीं भी कभी भी बिलकुल बेकार न करें । फर्ष, वाहन व अन्य वस्तुओं को पहले झाड़ कर फिर पानी से साफ करें । वर्षा जल संग्रहण तकनीक प्रयोग में लाएं । पानी बचत के लिए सुक्षम सिंचाई प्रणाली अपनाएं । तम्बाकू, चीनी व चावल का प्रयोग कम से कम करें क्योंकि इनके उत्पादन में सर्वाधिक पानी खर्च होता है ।

भूजल दोहन से खतरा महान । भूकम्प जल्दी देते फरमान ।
वाटर हार्वेस्टिंग होना चाहिए । रिचार्जर सबको लगाना चाहिए ।
रिसाइकिलिंग का प्रचार बढ़ाओ । पानी को बारम्बार काम में लाओ ।
तालाब बावड़ी खोलो सारे । तभी बचेंगे पशु हमारे ।
पानी के लिए लड़ते प्रदेश । प्रदेश ही नहीं लड़ते हैं देश ।
अब भी यदि नहीं संभले प्राणी । होगा विश्व युद्ध का कारण पानी ।
हम सुधरेंगे जग सुधरेगा । बूंद बूंद से घट भरजेगा ।
जन जन को हमें जगाना होगा । घर घर सन्देश पहुंचाना होगा ।
जल बचेगा जीवन बचेगा । जल नही तो कल नहीं

जल स्टार रमेश गोयल,एडवोकेट
20 आर एस डी कलोनी, सिरसा (हरियाणा)
ईमेल rameshgoyalsrs@rediffmail.com
मो :– 09416049757

अतिथियों का स्वागत किया।

रोहतक : 09.01.2011 को लोहड़ी उत्सव व मकर संक्राति पर परिवार मिलन खुशबू गार्डन में मनाया गया। 23 को नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जयंती पर एक कार्यक्रम सुभाष चौक पर हुआ जिसके मुख्य वक्ता डा॰ ओम प्रभात अग्रवाल रहे।

बल्लबगढ़ : शाखा द्वारा लोहड़ी उत्सव कारगिल के शहीदों को शत-शत नमन कर मनाया गया। महोत्सव में मुख्य अतिथि सुरेश लोहिया एवम् कार्यक्रम की अध्यक्षा डा॰ विजय प्रभा अग्रवाल क्षेत्रीय संगठन मंत्री क्षेत्र-3 रही। शाखा अध्यक्ष अमर बंसल, सुरेन्द्र जग्गा, व महेन्द्र सर्राफ ने अतिथियों का स्वागत किया।

स्वर्णपथ : 26.01.2011 को गणतंत्र दिवस की संध्या पर दिव्य जागृति संस्थान के सहयोग से व सोनीपत की अन्य सामाजिक संस्थाओं समाज सेवा समिति, रोटरी क्लब, लॉयन्स क्लब व सौंई जन सेवा समिति के सानिध्य में 'राष्ट्र आराधाना' संगीतम् कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसकी अध्यक्षता जिला उपायुक्त अजीत बालाजी जोशी ने की। इस अवसर पर अतिरिक्त जिला उपायुक्त श्री दलाल, एस॰डी॰एम॰ जगनिवास व शहर की गणमान्य हस्तियाँ विशेष रूप से उपस्थित थी।

हरियाणा उत्तर

सदर अम्बाला छावनी : शाखा द्वारा 09.01 से 16.01. 2011 तक 10 दिवसीय कैम्प का आयोजन हरगोपाल गर्ल्स सीनियर सैकेण्डरी स्कूल में किया गया। कैम्प में 6 स्कूलों की 106 छात्राओं ने भाग लिया। द्वितीय सिमेस्टर दसवीं कक्षा का गणित विषय का पाठ्यक्रम करवाया गया। श्री रमेश सिंघल ने अपने सहयोगी श्री लाजपतराय गर्ग के साथ मिलकर कैम्प में बच्चों को पढ़ाया। यह शाखा का स्थायी प्रकल्प है तथा ऐसा ही कैम्प ग्रीष्मावकाश में भी लगाया जाता है।

तरावड़ी : शाखा द्वारा खेल प्रतियोगिता एवं कल्चरल कार्यक्रम के तहत लोक नृत्य का आयोजन एस॰एम॰ मेमोरियल पब्लिक स्कूल में किया गया। मुख्य अतिथि श्री रामसिंह नम्बरदार एवं पार्षद तरावड़ी रहे। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले बच्चों को एवं निर्णायक मण्डल को स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। अध्यक्ष दिनेश गर्ग, शाखा प्रधान रमेश चावला, सचिव नरेश शर्मा का सहयोग रहा।

हरियाणा पश्चिम

सिरसा : क्षेत्रीय मंत्री रमेश गोयल को विवेकानन्द वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय द्वारा अपने वर्षिक समारोह में उनके द्वारा चलाये जा रहे जल बचत अभियान के लिए सम्मानित किया गया। श्री गोयल को सम्मानित करते हुए विद्यालय के संचालक श्री राम सिंह यादव ने कहा कि देश व समाज की ज्वलंत समस्या पानी

की कमी को श्री गोयल ने जल बचत अभियान को मिशन के रूप में लिया हुआ है, और विद्यार्थियों के माध्यम से पानी की कमी के कारण पानी के महत्व तथा बचत की आवश्यकता व उपयोगिता के बारे में घर-घर में यह सन्देश पहुंचा रहे हैं। अब तक एक लाख से अधिक विद्यार्थियों को यह सन्देश पहुचाने के लिए उन्हें मुख्य अतिथि हरीश भाटिया द्वारा सम्मानित किया गया।

पंजाब उत्तर

फगवाड़ा : श्री गुरुतेग बहादुर बलिदान दिवसपर भाषण प्रतियोगिता में राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष आई॰डी॰ ओझा विशेष रूप से उपस्थित रहे। इसके अतिरिक्त पुष्पसज्जा प्रतियोगिता में स्कूलों के 46 छात्रों ने तथा सामान्य ज्ञान परीक्षा में 20 स्कूलों के छात्रों ने भाग लिया। मकर संक्रान्ति के पावन अवसर तथा स्वामी विवेकानन्द की जन्मदिन के उपलक्ष्य में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें सर्दी के मौसम के चलते गरीबों को कम्बल बांटे गए। परिषद् अध्यक्ष हरजिन्द्र गोगना नगर कौंसिल अध्यक्ष बलभद्र सेन दुग्गल, हरमेश पाठक, विशाल टंडन, विपन हौंगरा, व अन्य सदस्य उपस्थित थे। शाखा द्वारा वार्षिक परिवार

भू-जलस्तर में तेजी से आ रही गिरावट इस खतरे का संकेत है कि आने वाले समय में तीसरा विश्वयुद्ध पानी के नाम पर ही लड़ा जाएगा। 2031 तक वर्तमान स्तर से चार गुणा अधिक पानी की आवश्यकता होगी। पानी के महत्व को न समझ पाने और इसके अनियमित व अधिक दोहन एवं प्रदूषण के चलते ही आज सभी देशों को पानी के संकट का सामना करना पड़ रहा है। पानी के लिए लड़ाई गली मोहल्ले से लेकर विभिन्न देशों तक अक्सर देखी गई है।

बिन पानी सब सूना

रमेश गोयल

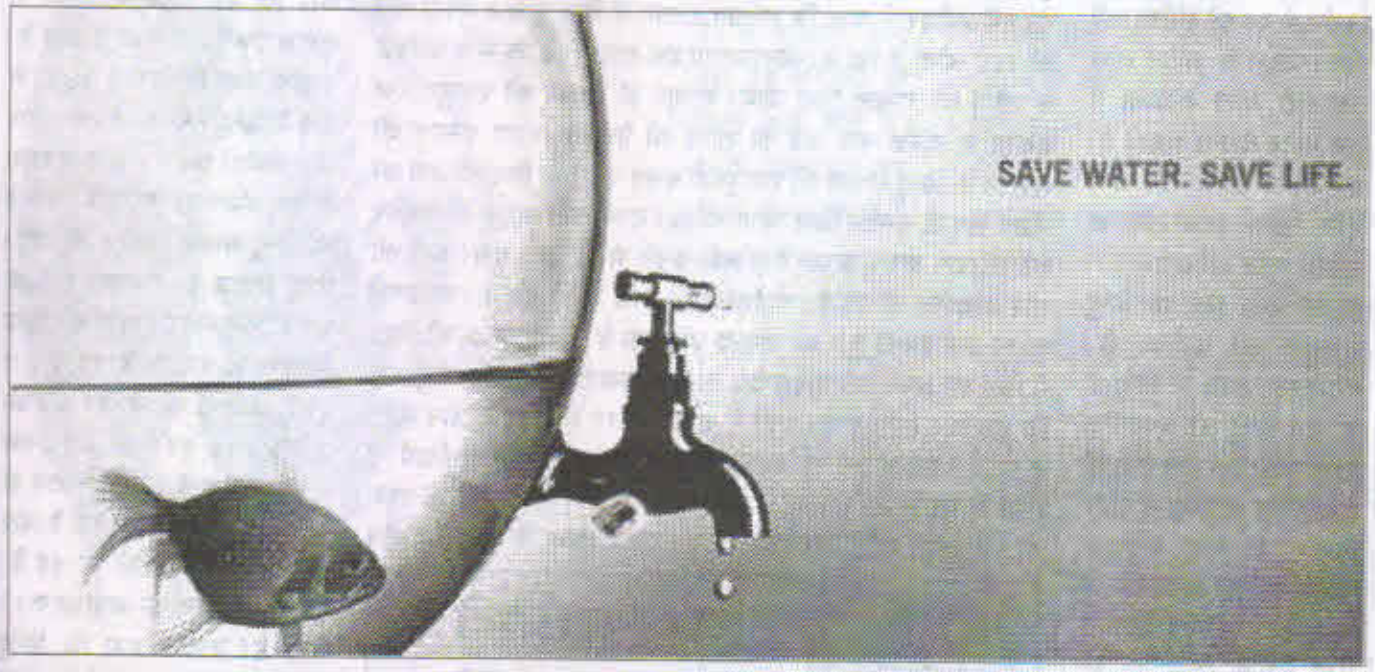

जल ही जीवन है। यह बात जानते हुए भी हम पानी को बहुत बरबाद करते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के 2004 के एक सर्वेक्षण के अनुसार पूरी दुनिय के एक अरब से अधिक लोगों को पीने का साफ पानी नहीं मिलता। भू व जल वैज्ञानिकों की भविष्वाणियों के अनुसार भारत, चीन और अमेरिका जैसे देशों में अधिक जल दोहन से भू-जलस्तर में तेजी से आ रही गिरावट इस खतरे का संकेत है कि आने वाले समय में तीसरा विश्वयुद्ध पानी के नाम पर ही लड़ा जाएगा। 2031 तक वर्तमान स्तर से चार गुणा अधिक पानी की आवश्यकता होगी। पानी के महत्व को न समझ पाने और इसके अनियमित व अधिक दोहन एवं प्रदूषण के चलते ही आज सभी देशों को पानी के संकट का सामना करना पड़ रहा है। पानी के लिए लड़ाई गली मोहल्ले से लेकर विभिन्न देशों तक अक्सर देखी गई है। पंजाब, हरियाणा, कर्नाटक-तामिलनाडू, हरियाणा-दिल्ली जैसे प्रांतों का पानी के लिए आपसी तनाव जग जाहिर है। बहुत से लोग यह नहीं जानते कि वे अनजाने में बहुत पानी बरबाद करते हैं। हवा, पानी, मिट्टी आदि प्रकृति की देन हैं परन्तु मुफ्त का माल नहीं है। भारत में जल संकट को दूर करने के रास्ते में मुख्य चुनौतियां हैं। 1 सार्वजनिक सिंचाई नहरों की क्षमता में बढ़ोतरी, 2. कम हो रहे भूमि जल संग्रह को पुनः संग्रहित करना, 3. प्रति यूनिट पानी में फसलों की उत्पादकता में वृद्धि 4. भूमिगत और भूमि के ऊपर जल स्त्रोतों को नष्ट होने से बचाना। विख्यात जल विशेषज्ञ प्रो. असित बिस्वास के अनुसार बीते दो सौ वर्षों के मुकाबले आने वाले 20 वर्षों में जल प्रबन्धन की आवश्यकता अधिक होगी। अगर हम पानी की बचत नहीं करेंगे तो बिन पानी सब सून अनुसार एक दिन ऐसा आएगा कि पानी के बिना हम तड़फने लगेंगे। किसी एक शहर में सभी मिलकर यदि यह संकल्प कर लें कि हम पानी को बरबाद नहीं होने देंगे तो उस शहर में कभी भी पानी की कमी नहीं होगी। आओ हम सब मिलकर यह सुनिश्चित करें कि हम पानी को बरबाद नहीं करेंगे।

के नाम से शाखा द्वारा आयोजित किया गया। जिसमें 370 प्रतिनिधियों एवं 24 शाखाओं एवं ग्राम समितियों ने भाग लिया। अधिवेशन में राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष आई॰डी॰ ओझा उपस्थित थे। रिपुदमन सिंह गुलाटी समाज सेवी वरिष्ठ अतिथि थे। अधिवेशन 2010-11 के विभिन्न प्रकल्प प्रभारिओं ने अपने प्रकल्पों की विस्तृत जानकारी दी।

हरियाणा पश्चिम

उक्लाना मण्डी हिसार : शाखा सदस्यों ने 13 जनवरी को लोहड़ी के अवसर पर परिवार मिलन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस के अवसर पर स्वामी विवेकानन्द पार्क में तिरंगा लहराया गया। होली के अवसर पर होली उत्सव का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि प्रमुख समाज सेवी रामविलास गोयल रहे।

बरवाला हिसार : शाखा ने हांसी मार्ग पर मनी भटटा राजा ब्रिक्स कंपनी, नवदीप ब्रिक्स कंपनी, शिव भटटा कंपनी आदि स्थानों पर करीब 150 जरूरतमंद लोगों को वस्त्र वितरित किए। विधायक रामनिवास के वार्ड नं॰ 5 में नागरिक अभिनन्दन किया गया। काका कामरेड ने विधायक को शॉल भेंट कर सम्मानित किया। गर्ल्स सी॰सै॰ स्कूल में घौड़ेला गणतंत्र दिवस पर तिरंगा फहराया गया। इस अवसर पर नायब तहसीलदार इन्द्र सिंह, थाना प्रभारी कृष्णलाल, डा॰ सी॰बी॰ बंसल, शिव कौशिक आदि अन्य सदस्य उपस्थित थे।

सिरसा : समाज सेवी रमेश गोयल अध्यक्ष जिला इनकमटैक्स बार और ज़ोनल कन्वीनर (नेशनल सोशल आर्गनाइजेशन) द्वारा लगभग पिछले साल से पानी व बिजली बचत अभियान चला रहे है। उनके विद्यालयों तथा संस्थानों के द्वारा 7000 से अधिक लोगों को इसका महत्व बता चुके है। अपने अथक प्रयास से ''जल विद्युत बचत'' पुस्तक भी छपवा रहें है। इस पुण्य: कार्य के लिये शुभ कामनाए साथ है।

टोहाना : शाखा द्वारा राजकीय माध्यमिक विद्यालय में 2 जनवरी 2010 को जर्सी वितरण का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि ओवर ब्रिज प्रोजेक्ट के मैनेजर हरविन्द्र सिंह ने शिरकत की 74 गरीब विद्यार्थियों को सर्दी से बचाव के लिए गर्म जर्सिया वितरित की गई। शाखा द्वारा नेत्रदान अभियान में सौ का आंकड़ा पूरा हुआ। **पंजाब नैशनल बैंक के कर्मचारी अनिल अग्रवाल की माता विद्या देवी ने 20 जनवरी मरनोपरांत नेत्रदान कर नेत्रहीनों की अंधेरी-दुनिया में उजाला कर दिया। 03.02.2010 को 82 वर्षीय वेद प्रकाश के निधन पश्चात् नेत्रदान किये गये।**

कांलांवाली : शाखा द्वारा विक्रमी संवत् 2067 के अवसर पर सदस्य मिलन समारोह का आयोजन किया गया। 21 मार्च 2010 को रामामण्डी निवासी अमरनाथ बंसल का शरीर दान करवाया गया। जिसे आदेश मेडिकल कॉलेज में भेजा गया। शरीरदानी परिजनों को परिषद् द्वारा प्रशस्ति पत्र देकर समारोह में सम्मानित किया गया। यह क्षेत्र का आठवां शरीर दान था। शाखा अध्यक्ष धर्मपाल गर्ग ने बताया कि क्षेत्र से 380 नेत्रदान भी हो चुके हैं। इस अभियान में श्री विनेश

बिन पानी सब सून

जल ही जीवन है। यह बात जानते हुए भी हम पानी को बहुत बर्बाद करते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के 2004 के एक सर्वेक्षण के अनुसार पूरी दुनिया के एक अरब से अधिक लोगों को पीने का साफ पानी नहीं मिलता है। भू व जल वैज्ञानिकों की भविष्यवाणियों के अनुसार भारत, चीन और अमेरिका जैसे देशों में अधिक जल दोहन से भू-जलस्तर में तेजी से आ रही गिरावट इस खतरे का संकेत है कि आने वाले समय में पानी के लिए लड़ाइयां हो सकती हैं और तीसरा विश्वयुद्ध पानी के नाम पर लड़ा जायेगा। पानी के महत्व को न समझ पाने और इसके अनियमित व अधिक दोहन एवं प्रदूषण के चलते ही आज सभी देशों को पानी के संकट का सामना करना पड़ रहा है। पानी के लिए लड़ाई गली-मौहल्ले से लेकर विभिन्न देशों तक अक्सर देखी गई है। पंजाब-हरियाणा, कर्नाटक-तामिलनाडु, हरियाणा-दिल्ली जैसे प्रांतों के लिए पानी आपसी तनाव जगजाहिर है। बहुत से लोग यह नहीं जानते कि वे अनजाने में बहुत पानी बर्बाद करते हैं। हवा, पानी, मिट्टी आदि प्रकृति की देन है, परंतु मुफ्त का माल नहीं। अगर हम पानी की बचत नहीं करेंगे, तो बिन पानी सब सून अनुसार एक दिन ऐसा आयेगा कि पानी के बिना हम तड़पने लगेंगे। एक शहर में सभी मिलकर यदि यह संकल्प कर लें कि हम पानी को बर्बाद नहीं होंगे देंगे, तो उस शहर में कभी भी पानी की कमी नहीं होगी। आओ हम सब मिलकर यह सुनिश्चित करें कि पानी को बर्बाद नहीं करेंगे। निम्नलिखित अनुसार आप पानी की बचत कर सकते हैं।

- कभी भी जल को बिना आवश्यकता खुला न छोड़ें।
- शेविंग या पेस्ट करते या हाथ-मुंह धोते समय पानी का प्रयोग न करते समय नल बन्द कर दें। मग में पानी भरकर ही प्रयोग करें। यदि सम्भव हो तो पुश बटन वाली टूटी लगवायें।
- नहाते समय पानी बाल्टी में भर कर ही प्रयोग करें।
- कपड़ों को मशीन में नहीं बाल्टी में खंगालें।
- किसी पाइप में रिसाव हो तो उसे तुरंत ठीक करावें।
- पानी की टंकी या कूलर आदि में गुबारा लगवायें ताकि टंकी भर जाने पर पानी बाहर न निकले।
- बर्तन साफ किये हुए टब के पानी व कपड़े खंगाले हुए पानी को पौधों व बगीचे में काम लें।
- मिट्टी वाले सामान या स्थान को पहले झाड़ पोंछ ले, फिर गिले कपड़े से साफ करें।
- घरों में फर्श धोने की बजाय केवल पोचा लगाकर ही साफ करें। पाइप से फर्श कभी न धोएं।
- यदि कहीं कोई सार्वजनिक नल खुला देखें, तो उसे तुरंत बन्द कर दें।
- अपने वाहनों को पाइप से न धोएं।
- छिड़काव न करें।

स्वयं करें, परिवार व काम वाले नौकर को समझाएं, समाज को जगाएं, देश को बचाएं।

रमेश गोयल, क्षेत्रीय संयोजक, भारत विकास परिषद 20 आरएसडी कॉलोनी, सिरसा

आईआईटी में चयन

श्रीगंगानगर। अग्र वैश्य परिवारों के अनेक प्रतिभावान बच्चों ने कठिन परिश्रम, लगन के बल पर आईआईटी की परीक्षा में उच्च रैंक हासिल किए हैं।

हनुमानगढ़ के इलैक्ट्रोनिक्स उत्पाद विक्रेता रमेश बंसल के होनहार सुपुत्र मोहित बंसल का आईआईटी में चयन हुआ है। परीक्षा में उसने 393वां रैंक प्राप्त किया है।

इसी प्रकार नोहर के साहित्य साधना पुत्र अरुण्मी कुमार ने 1936वां रैंक, पदमपुर के वरिष्ठ अधिवक्ता मदनलाल बंसल के सुपुत्र अतुल बंसल ने 153वां रैंक प्राप्त किया।

गंगानगर के भरतनगर निवासी डॉ. प्रेम गोयल के पुत्र भुवनेश गोयल ने 123वां रैंक हासिल किया है।

संगरिया निवासी गौरव करवा ने 3313 रैंक हासिल की है। गौरव कृष्ण करवा का पुत्र है। उसने बताया कि वह द्वितीय प्रयास में आईआईटी में चुना गया। उसकी 20 जून को मुम्बई में काउंसलिंग होगी। अग्र वैश्य समाज के इन होनहार बच्चों की शानदार उपलब्धि से पूरा समाज गौरवान्वित हुआ है। वैश्य आभा परिवार की ओर से बधाई।

भारतेन्दु हरीशचन्द्र

भारतेन्दु हरीशचन्द्र का जन्म 9 सितम्बर 1850 को वाराणसी के एक सम्पन्न समृद्ध अग्रवाल परिवार में हुआ था। अपने पिता व पितामह से भौतिक सम्पन्नता के साथ-साथ वैष्णव संस्कार व साहित्यिक प्रतिभा भी उन्हें उत्तराधिकार में मिली थी। केवल पांच वर्ष की ही आयु से भक्ति संगीत की ओर उनका रुझान हो गया था और भक्ति करने लगे थे। आज भारतेन्दु हरीशचन्द्र को आधुनिक हिन्दी साहित्य का पितामह कहा जाता है। उनके साहित्य में परम्परा से आधुनिकता की झलक दिखती है। उन्होंने पुराने परम्परागत साहित्य को नई लेखन कला भाषा शैली के साथ राष्ट्रीय देश प्रेम व प्रगतिशील भावना से ओत-प्रोत करके हिन्दी साहित्य में क्रांतिकारी परिवर्तन कर दिया। उनकी साहित्यिक कृतियों में नाटक, प्रेम गीत, अत्यधिक प्रसिद्ध है। अपनी बौद्धिक क्षमता व मौलिक लेखन प्रतिभा से उन्होंने हिन्दी कविता को आम आदमी के लिए प्रस्तुत किया। जिस पर अब तक शाही परिवारों व नवाबी दरबारों का ही अधिकार था। उत्तर भारत में अनेक स्थानों की यात्रा करके उन्होंने अन्य भारतीय भाषाएं बंगाली, मराठी, गुजराती, मारवाड़ी व पंजाबी सीखी, जिसमें उनकी लेखन प्रतिभा में और निखार ला दिया।

उन्होंने अनेकों पत्रिकाएं जैसे हरीशचन्द्र चन्द्रिका, कवि वचन, सुधा, बाल बोधिनी पत्रिका, भगवत भक्ति तोषिनी निकाली। इन उत्कृष्ट साहित्यिक पत्रिकाओं में जीवन के अनेकों विषयों पर सारगर्भित लेख होते थे। उनके लेखों में मध्यमवर्गीय भारतीय की पीड़ा व कष्ट युवाओं की आशाएं व महत्वाकांक्षाएं, भारतीय समाज से अन्याय का विनाश करके प्रगतिशील भारत की स्थापना को विशेष महत्व मिला, जो उनकी विषय वस्तु भी थी। उनके लेखों व भाषणों से समाज सुधार व देश प्रेम की भावना को नई दिशा मिली। उन्होंने बाल विवाह का विरोध कर विधवा विवाह का समर्थन किया। उन्होंने महिलाओं की उन्नति के लिए उनमें शिक्षा का प्रचार-प्रसार किया। प्रशंसकों द्वारा उन्हें भारतेन्दु की उपाधि मिली। वह कल्पनाशील, दानवीर, सर्वमान्य व सर्वपूज्य थे, पर उनकी शाह खर्ची ने उन्हें विपन्नता की स्थिति में पहुंचा दिया और मात्र 35 वर्ष के ही आयु में उनकी मृत्यु हो गई।

हम निम्नलिखित अनुसार पानी की बचत कर सकते है:

- कभी भी नल को बिना आवश्यकता खुला न छोड़ें।
- शेविंग या पेस्ट करते या हाथ मुंह धोते समय पानी का प्रयोग न करते समय नल बन्द कर दें।
- मग में पानी भरकर प्रयोग करें। यदि सम्भव हो तो पुश बटन वाली टंकी लगवायें।
- नहाते समय पानी बाल्टी भर कर प्रयोग करें।
- कपड़ों को मशीन में नहीं बाल्टी में खंगालें
- किसी पाईप में रिसाव हो तो उसे तुरन्त ठीक करायें।
- पानी की टंकी/कुलर आदि में गुबारा लगवायें ताकि टंकी भर जाने पर पानी बाहर न निकले
- बर्तन साफ किए हुए टब के पानी व कपड़े खंगाले हुए पानी को पौधों व बगीचे में या अन्यथा काम लें।
- मिट्टी वाले सामान/स्थल को पहले झाड़ पोंछ लें फिर गीले कपड़े से साफ करें।
- घरों में फर्श धोने की बजाए केवल पोचा लगाकर ही साफ करें। पाईप से फर्श कभी न धोएं।
- यदि कहीं कोई सार्वजनिक नल खुला देखे तो उसे तुरन्त बन्द कर दें।
- अपने वाहनों को पाईप से न धोएं।
- छिड़काव बिलकुल न करें।
- आर ओ द्वारा निकाला गया पानी बेकार न जाने दें।
- पौधों को आवश्यकता अनुसार पाईप की बजाए बाल्टी से ही पानी दें।

- सिंचाई के लिए फव्वारा/ड्रिप तकनीक (सिस्टम) अपनाएं।
- वर्षा जल संग्रहण तकनीक अपनाएं तथा गांव के तलाब में पानी एकत्रित करें।

स्वयं करें, परिवार व काम वाली/नौकर को समझाएं, समाज को जगायें, देश बचाएं।

-रमेश गोयल, 20 आरएसडी कॉलोनी, सिरसा

वैचारिक गिरावट

हमारी सभ्यता के मूल आधार हैं हिमालय, गंगा, गो और ऋषि-मुनि। इन सभी का हमारी जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है या हम कह सकते हैं कि इनके बिना हमारी सभ्यता है ही नहीं। हिमालय, गंगा और गो का शायद कोई वैज्ञानिक भी विरोध न कर सके। जब हम हर तरह से मानते हैं कि इनके बिना हमारा जीवन नरक में बदल जाएगा, तो फिर क्यों हम इन प्राकृतिक संसाधनों से खिलवाड़ कर अपने महाविनाश को न्यौता दे रहे हैं? यह हमारा दुर्भाग्य है कि कुछ लोग अपने राजनीतिक फायदे के लिए हर बात को राजनीति से जोड़ देते हैं। यह हमारी वैचारिक गिरावट के अलावा कुछ नहीं। यदि हम इस प्राकृतिक खजाने को अपनी गलत राजनीतिक सोच से अलग रखें, तो शायद हमारी सभ्यता बची रह सकती है। अन्यथा हम अपनी महाविनाश को दावत दे चुके हैं। भला हो उन संतों का, जो अपने ही देश में, अपनों के द्वारा ही समय-समय पर

अपमानित होकर भी मानवता को जीवित रखने का प्रयास कर रहे हैं। उन्हीं संतों ने आज गो माता को बचाने के लिए कमर कसी है। ये सन्त सब कुछ छोड़कर दिन-रात समाज को जगाने में लगे हैं। ये सन्त लोगों से कह रहे हैं कि गाय पालो और गंगा जी को स्वच्छ रखो। फिर हम क्यों नहीं जग रहे हैं?

-दिनेश पाठक, गुड़गांव, हरियाणा

अग्रवाल समाज के योगदान की सराहना

होशियारपुर। बाबा रामदेव के होशियारपुर आगमन पर भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर बाबा रामदेव ने कहा कि देश के विकास में अग्रवाल समाज का बहुत बड़ा योगदान है इसलिए इस समाज की रचना इस प्रकार होनी चाहिये कि समाज का कोई भी अंदरूनी झगड़ा कोर्ट-कचहरी न जाकर अपने समाज के अंदर मिल बैठ कर ही निपटा लिया जाए, जिससे समाज की मर्यादा बनी रहेगी और हर अग्रवाल परिवार का मान बना रहेगा। उन्होंने अग्रवाल समाज को एक जुट होकर काम करने का आवाहन किया।

अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन पंजाब प्रदेश की होशियारपुर इकाई के जिला प्रधान सेठ नवदीप कुमार अग्रवाल ने बाबा रामदेव को अग्रवाल समाज की तरफ से हर तरह का सहयोग देने का आश्वासन दिया।●

पर्यावरण दिवस पर पौधारोपण

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर भारत विकास परिषद के राष्ट्रीय संयोजक, पर्यावरणविद रमेश गोयल ने कोर्ट परिसर में पौधारोपण किया। उपायुक्त अंशज कुमार, अतिरिक्त उपायुक्त, जिला वन अधिकारी सहित अनेक अधिकारियों ने पौधारोपण करके पर्यावरण दिवस को सार्थक बनाया।

श्री गोयल अब तक लगभग दो लाख लोगों को विद्यालयों, महाविद्यालयों, कथा कीर्तन आयोजनों में जाकर प्रत्यक्ष रूप से इनकी आवश्यकता, महत्व व उपाय बता चुके हैं। जल चालीसा के रचेता, हरियाणा प्रांत के लिए जल स्टार अवार्डी, प्रशासन व अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित श्री गोयल के लिए व्यवसाय की तुलना में पर्यावरण व जल संरक्षण मिशनरी व प्राथमिकता है।●

डॉ. कमला अग्रवाल व अलका गुप्ता का अभिनन्दन

बड़ौत। पश्चिमी उत्तर प्रदेश महिला अग्रवाल सम्मेलन द्वारा सुप्रसिद्ध शिक्षाविद् डॉ. कमला अग्रवाल एवं समाज सेविका अलका गुप्ता का अभिनन्दन किया गया। डॉ. अग्रवाल को पश्चिमी उ.प्र. महिला अग्रवाल सम्मेलन का प्रांतीय अध्यक्ष तथा श्रीमती गुप्ता को प्रांतीय महामंत्री नियुक्त किया गया है।

अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के राष्ट्रीय मंत्री अभिमन्यु गुप्ता ने दोनों का स्वागत करते हुए विश्वास व्यक्त किया कि इससे संगठन और मजबूत होगा। अग्रवाल मंडी की नगर अध्यक्ष श्रीमती कौशल गुप्ता ने अपने स्वागत भाषण में कहा है कि इनकी नियुक्ति से नगर एवं जनपद का गौरव बढ़ा है। आयोजन में समाज के लोग भारी तादाद में उपस्थित थे।●

इकाई के चुनाव पर चर्चा

करौली (राजस्थान)। अखिल भारतीय जिला अग्रवाल युवा सम्मेलन की बैठक अग्रवाल समाज सदन में जिलाध्यक्ष बंटी अग्रवाल की अध्यक्षता में हुई। मुख्य अतिथि प्रदेशाध्यक्ष राजेश गोयल ने दीप प्रज्वलित कर बैठक की शुरूआत की। इस मौके पर करौली, हिण्डौनसिटी व श्रीमहावीरजी इकाई के चुनाव कराने पर चर्चा हुई। जिला मीडिया प्रभारी सुमित गर्ग ने निष्क्रिय सदस्यों को सक्रिय करने और आजीवन सदस्यता पर जोर दिया। बैठक में समाज के बेरोजगार युवकों के लिए रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने पर भी चर्चा हुई। बैठक में जिला महामंत्री गयाजीत, पूर्व महामंत्री देवेन्द्र सिंहल सहित संगठन मंत्री पंकज गोयल, अंकुर गोयल, हिमांशु कुमार, कपिल मित्तल, अंशुल गर्ग, मदनमोहन गुप्ता आदि मौजूद थे।●

शादी की सालगिरह की हार्दिक शुभकामनाएं

SH. RAKESH SINGHAL
SMT. MEERA SINGHAL
Date of Marriage : 01.07.1989
D-65, Ranjeet Nagar, Bharatpur, Rajasthan (East)-321001
9414216279

SH. RAJESH KUMAR GOYAL
SMT. INDU GOYAL
Date of Marriage : 08.07.1989
Mathura Gate, Bharatpur, Rajasthan (East)-321001
9414268216

SH. MAHESH SINGHAL
SMT. SUNITA SINGHAL
Date of Marriage : 12.07.1989
Ambika Sanitary & Tiles, Main Salawas Road, Jodhpur, Rajasthan (West)-342001
9414463691

कोरोना, प्रकृति और रामायण

रमेश गोयल
लेखक चिन्तक, समीक्षक व पर्यावरण एवं जल संरक्षण को समर्पित कार्यकर्ता हैं

तीव्र गति से पूरी दुनिया में फैल गई एक बीमारी, जिसे कोविद–19 के नाम से जाना जा रहा है, बहुत खतरनाक महामारी का रूप ले चुकी है। इसका वायरस एक छूत का रोग है जो रोगी के सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति के शरीर में पहुंच जाता है। वैश्विक महामारी के चंगुल में विश्व के विकसित देश भी पूरी तरह आ चुके हैं। जनता द्वारा अपने आप को लाकडाऊन द्वारा बचाव करने के अतिरिक्त कोई सही उपचार अभी तक नहीं आया है यानि किसी भी रोगी के सम्पर्क में आने से बचना ही एकमात्र सुरक्षा है। लोग मानसिक रूप से तनावग्रस्त या रोगी न हों इसलिए भारतीय संस्कृति को समर्पित सर्वाधिक लोकप्रिय धारावाहिक रामायण व महाभारत का प्रसारण आरम्भ किया गया। सैंकडों वर्श पूर्व रामायण के उत्तरकाण्ड के अन्तिम चरण (सोपान) में तुलसीदास जी ने पूर्ण रूपेण सामाजिकता का वर्णन किया है जैसे दरिद्रता, परोपकार, विपत्ति, रोग, निन्दा, अहंकार आदि। दोहा 120 (ख) से आगे चौपाई 14 में चमगादड का वर्णन सीधा कोरोना से जोड़ता है क्योंकि प्राप्त जानकारी अनुसार यह महामारी चमगादड़ को खाने के कारण फैली है। गीता प्रैस गोरखपुर द्वारा सम्वत् 2045 (सन 1988) में प्रकाशित श्री राम चरित मानस के 73वें संस्करण के पृश्ठ 1048 व आगे का विवरण निम्न प्रकार है।

सब कै निंदा जे जड करहीं। ते चमगादुर होई अवतरहीं ।।
सुनहु तात अब मानस रोगा । जिन्ह ते दुख पावहि सब लोगा।।

जो मूर्ख मनुश्य सबकी निन्दा करते हैं, वे चमगादड होकर जन्म लेते हैं। हे तात! अब मानसरोग सुनिये, जिनमें सब लोग दुःख पाया करते हैं।

मोह सकल व्याधिन्ह कर मूला। तिन्ह ते पुनि उपजहिं बहु सूला।।
काम बात कफ लोभ अपारा। क्रोध पित्त नित छाती जारा ।।

सब रोगों की जड़ मोह (अज्ञान) है। उन व्याधियों से फिर और बहुत– से शूल उत्पन्न होते हैं। काम बात है, लोभ अपार (बढा हुआ) कफ है और क्रोध पित्त है जो सदा छाती जलाता रहता है। ।।15।। (कोरोना के ये सब लक्षण ही तो हैं।)

प्रीति करहिं जौं तीनिउ भाई। उपजइ सन्यपात दुखदाई ।।
विशय मनोरथ दुर्गम नाना । ते सब सूल नाम को जाना ।।

यदि कहीं ये तीनों भाई (वात, पित्त और कफ) प्रीत कर लें (मिल जायें) तो दुखदायक सन्निपात रोग उत्पन्न होता है। कठिनता से प्राप्त (पूर्ण होने वाले जो विशयों के मनोरथ हैं, वे ही सब शूल (कश्टदायक रोग) हैं उनके नाम कौन जानता है (अर्थात वे अपार हैं) ।। 16 ।।

रघुपति भगति सजीवन मूरी। अनूपान श्रद्धा मति पूरी ।।
एहि बिधि भलेहीं सो रोग नसाहीं । नाहि त जतन कोटि नहिं जाहीं। ।।

श्री रघुनाथ जी की भक्ति संजीवनी जड़ी है। श्रद्धा से पूर्ण बुद्धि ही अनुपान (दवा के साथ लिया जाने वाला मधु आदि) है। इस प्रकार का संयोग हो तो वे रोग भले ही नश्ट हो जाये, नहीं तो करोड़ों प्रयत्नों से भी नहीं जाते ।। 4 ।।

तृशा जाई बरू मृगजल पाना। बरू जामहिं संस सीस बिशाना ।।
अंधकारू बरू रबहि नसावै । राम बिमुख न जीव सुख पावै ।।

मृगतृश्णा के जल को पीने से भले ही प्यास बुझ जाय, खरगोश के सिर पर भले ही सींग निकल आवे, अन्धकार भले ही सूर्य का नाश कर दें, परन्तु श्रीराम से विमुख होकर जीव सुख नहीं पा सकता ।। 9 ।।

Jatayu National Park in Kerala.

बारि मथें घृत होइ सिकता ते बरु तेल ।
बिनु हरि भजन न भव तरिअ यह सिद्धांत अपेल ।।
जल को मथने से भले ही घी उत्पन्न हो जाय और बालू से भले ही तेल निकल आवे,परन्तु श्री हरि के भजन बिना संसार रूपी समुद्र से नहीं तरा जा सकता,यह सिद्धान्त अटल है।।122क।
मसकहि करइ बिरंचि प्रभु अजहि मसक ते हीन ।
अस बिचारि तजि संसय रामहि भजहिं प्रबीन ।।
प्रभु मच्छर को ब्रहमा कर सकते हैं और ब्रहमा को मच्छर से भी तुच्छ बना सकते हैं । ऐसा विचार कर चतुर पुरूश सब सन्देह त्यागकर श्रीराम को ही भजते है। ।। 122 (ख) ।।

अनेक चौपाईयों के माध्यम से पूरे प्रसंग को तुलसीदास जी की चेतावनी पूर्ण भविश्यवाणी मानते हुए श्रीराम व श्री हरि के नाम के स्थान पर प्रकृति भाब्द को जोड लें तो आज की परिस्थिति (कोरोना जैसी महामारी) के संकेत स्पश्ट हो जायेंगे। छोटे छोटे रोग प्रकृति विमुख होने से कैसे बढते हैं और कैसे अनेक प्रकार की विपत्तियां कश्ट आते रहते हैं। चौपाई 15 में खांसी, फैफडों में जलन का संकेत कोरोना के लक्षण तुल्य ही तो हैं। चौपाई 16 में उनका यह कहना है कि यदि ये तीनों भाई यानि वात, कफ, पित्त रोग एक साथ मिलकर आक्रमण कर दें तो जो कश्टदायक रोग होगा उसका नाम कोई नहीं जानता। इनमें से एक ही रोग के व ाीभूत लोग मर जाते हैं फिर इनका संगम तो असाध्य महारोग होगा ही। चौपाई 19 में ज्वर (बुखार) का विवरण है और कोरोना में खांसी, फेफडों के संक्रमण के साथ ज्वर ही होता है। काम क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, राग, द्वेश, ईर्श्या, तृश्णा आदि सबको विभिन्न रोगों से जोडते हुए तुलसीदास जी ने समाज को दर्पण दिखाने का सुन्दर प्रयास किया है परन्तु आधुनिकता व भौतिकता की अन्धी दौड में पागल मनुश्य ने इस ओर कभी ध्यान नहीं दिया। उन्होंने कहा है कि रोग के विशय में पता लगने पर उसका प्रभाव क्षीण तो कर पायेंगे परन्तु श्रीराम की कृपा बिना पूर्णरूपेण समाप्त करना सुगम नहीं होगा यानि प्रकृति अनुकूल हुए बिना उपचार सम्भव नहीं जिसके होने में समय लगेगा। नियम, ज्ञान, जप, दान उत्तम आचरण व अन्य उपायों के बाद भी यह रोग आसानी से नहीं जाता। यानि नियमों व कार्य प्रणाली में अत्यन्त परिवर्तन के बाद भी मुक्ति आसान नहीं है। हर चौपाई का सरल भाशा में अर्थ हर व्यक्ति समझ सकता है। उसे इसी द्रश्टीकोण व भाव से समझने का प्रयास करें।

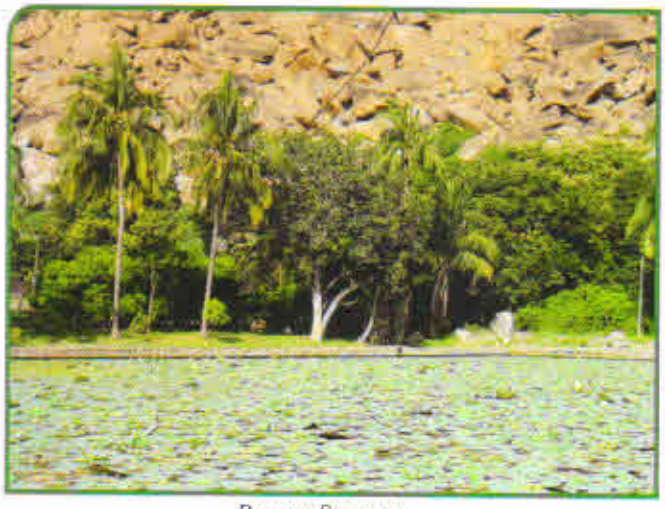

Pampa Sarover

उन्होंने उसका उपाय बताते हुए सदगुरू रूपी वैद्य के वचनों पर विश्वास करने के लिए सुझाव दिया है। वर्तमान में हमारे शासक–नियन्त्रक माननीय प्रधान मन्त्री मोदी जी को इस रूप में मानते हुए हम उनका अनु ारण करें तो समस्या का निदान हो सकता है। संयम और प्रकृतिनिश्ठ होकर कार्य व अनुपालन ही श्रेश्ठ साधन है। मलेरिया ज्वर हेतु प्रयोग की जाने वाली भारतीय दवा हाईड्रोक्सीक्लोरोक्विन ही सार्थक बनी हुई है और पूरा वि व इसके लिए भारत की ओर ताक रहा है।

उदाहरणों सहित उन्होंने यह भी बताया है कि असम्भव से असम्भव बात भी भायद सम्भव हो जाये जैसे कछुए की पीठ पर भले ही बाल उग आवें, बॉझ का पुत्र भले ही किसी को मार डाले, आकाश में भले ही अनेकों प्रकार के फूल खिल उठें, मृगतृश्णा के जल को पीने से भले ही प्यास बुझ जाय, खरगोश के सिर पर भले ही सींग निकल आवें, अन्धकार भले ही सूर्य का नाश कर दें, बर्फ से भले ही अग्नि प्रगट हो जाय, यानी ये सब अनहोनी बातें चाहें हो जायें परन्तु श्रीहरि (प्रकृति) से विमुख होकर जीव सुख प्राप्त नहीं कर सकता है। उनके अनुसार यह भयंकर रोग किसी छोटे बड़े का भेद भी नहीं करता। मुनि यानी उत्तम पुरूश, जिन्हें आजकल अति विशिश्ट व्यक्ति (वीआईपी) कहा जाता है, भी इससे बच नहीं पायेंगे। ब्रिटेन के राजकुमार चार्ल्स, प्रधानमन्त्री जानसन, स्वास्थ्य मन्त्री हैंकोक, कनाडा के प्रधान मन्त्री की पत्नी सोफिया, विख्यात एक्टर ओलिविया, इजराईल के स्वास्थय मन्त्री, अमेरिकन गायक जोहन प्राइन, टर्की फुटबालर रैकबर, गायिका कनिका कपूर, इन्दिरा वर्मा, बुकिन नटस के बास्केट बाल खिलाडी, आस्ट्रेलिया के गृहकार्य मन्त्री पीटर, ईरान के उप स्वास्थ्य मन्त्री सहित वि व के अनेक अतिविशिश्ट व्यक्ति इसकी चपेट में आ चुके हैं और इसकी भयंकरता व समानता के स्पश्ट उदाहरण हैं। उन्होंने कहा है कि केवल प्रभू ही असम्भव को सम्भव बना सकते हैं यानी प्रकृति ही सर्वशक्तिमान है। विश्व के अनेक देशों में समय समय पर तुफान, भूकम्प, जंगल की आग, बर्फबारी, बाढ आदि प्राकृतिक आपदाएं आती रहती हैं जिन्हें हम नजरअन्दाज करते रहे हैं और प्रकृति की चेतावनी को नहीं माना। प्रदूशण का स्तर इतना बढ गया कि भुद्ध वायू को तरसने लगे और स्थिति यहां तक पहुंची कि बच्चे विद्यालयों में मास्क लगाकर जाने लगे। पर्वतों की ताजा हवा के नाम पर भुद्ध वायु के सिलेन्डर बिकने लगे। प्रदूशित वातावरण से तापमान इतना बढा कि विश्व भर में अरबों की संख्या में जीव जन्तु मर गये परन्तु मनुश्य ने अपनी गति बढ़ाने की होड़ में सारी सीमाएं पार दी।

एक भाताब्दी पूर्व 50 प्रतिशत भूभाग पर जगंल थे जो अब 10 प्रतिशत से भी कम हैं। लाखों तालाब कुएं बावडी तथा हजारों नदियां सुख गए हैं या अतिक्रमण के शिकार हो गए हैं। अन्ततः प्रकृति रूपी भगवान ने मनुश्य को उसकी औकात बताई है और एक छोटे से किटाणु के माध्यम से सबको नानी याद दिला दी है। सकारात्मक सोच के साथ इसे हम आपदा की बजाय यह मानें कि प्रकृति ने हमें पर्यावरण शुद्धिकरण के साथ साथ स्वयं को पहचानने, स्वस्थ रखने, फास्ट फूड व ऊट पटांग वस्तुएं न खाने, बिना कारण यात्रा न करने, बाहर झांकने की बजाय अन्दर झांकते हुए मन मन्दिर में जाकर घर एक मन्दिर की कहावत को चरितार्थ करने का सुअवसर प्रदान किया है, तो श्रेश्ठ रहेगा।